

# जायसी

## इकाई की रूपरेखा-

### 1. उद्देश्य -

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी-

- मलिक मुहम्मद जायसी के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।
- जायसी के साहित्यिक एवं सामाजिक परिवेश को समझ सकेंगे।
- जायसी की प्रमुख कृतियों और उनके साहित्यिक महत्त्व का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- पद्मावत की कथावस्तु, उद्देश्य और काव्यगत विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- जायसी के प्रेम-दर्शन एवं सूफी विचारधारा का विश्लेषण कर सकेंगे।
- जायसी की भाषा, शैली, प्रतीक, बिंब और प्रकृति-चित्रण की विशेषताओं को पहचान सकेंगे।
- पद्मावत के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व को समझ सकेंगे।

### 2. प्रस्तावना -

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इस धारा के कवियों ने प्रेम को साधना का माध्यम बनाया। उनके लिए लौकिक प्रेम केवल सांसारिक आकर्षण नहीं था, बल्कि उसके माध्यम से अलौकिक प्रेम और परम सत्य की अनुभूति की जा सकती थी।

प्रेमाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं। जायसी ने भारतीय लोककथा, इतिहास, प्रेमाख्यान और सूफी दर्शन का अद्भुत समन्वय करते हुए पद्मावत जैसे महाकाव्यात्मक प्रबंध की रचना की। पद्मावत में रत्नसेन और पद्मावती की प्रेमकथा के माध्यम से प्रेम, साधना, त्याग, विरह, सौंदर्य और आध्यात्मिक उपलब्धि के विविध आयाम प्रस्तुत हुए हैं।

जायसी की विशेषता यह है कि उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक परिवेश और सूफी आध्यात्मिक चिंतन को एक-दूसरे से जोड़ दिया। उनकी काव्य-दृष्टि में प्रेम मनुष्य को उसके सीमित अहं से मुक्त करके व्यापक सत्य की ओर ले जाने वाली शक्ति है।

### 3. जायसी : परिचय -

पूरा नाम: मलिक मुहम्मद जायसी

जन्म-स्थान: जायस, वर्तमान अमेठी क्षेत्र, उत्तर प्रदेश

काल: लगभग 16वीं शताब्दी

भाषा: अवधी

काव्यधारा: निर्गुण प्रेमाश्रयी सूफी काव्यधारा

प्रमुख कृति: पद्मावत

मलिक मुहम्मद जायसी का नाम हिन्दी के उन प्रमुख कवियों में लिया जाता है जिन्होंने सूफी प्रेम-दर्शन को भारतीय कथात्मक परंपरा के साथ जोड़कर विशिष्ट काव्य-रचना की। उनका साहित्यिक महत्त्व मुख्यतः पद्मावत के कारण है। यह कृति केवल रत्नसेन और पद्मावती की प्रेमकथा नहीं है, बल्कि इसमें प्रेम की आध्यात्मिक यात्रा, विरह की साधना, आत्मसमर्पण और सत्य की खोज के प्रतीकात्मक अर्थ भी निहित हैं।

### 4. व्यक्तित्व एवं कृतित्व -

मलिक मुहम्मद जायसी हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन सूफी प्रेमाख्यानक काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। उनका पूरा नाम मलिक मुहम्मद जायसी था। उनके नाम में प्रयुक्त 'मलिक' शब्द उनके पूर्वजों की ओर संकेत करता है, जो संभवतः अरब से आकर उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले में स्थित जायस नगर में बस गए थे। जायस नगर के निवासी होने के कारण वे 'जायसी' कहलाए। जायसी ने अपनी रचनाओं में जायस के प्रति अपनी आत्मीयता और श्रद्धा व्यक्त की है। 'आखिरी कलाम' में वे कहते हैं- "जायस नगर मोर अस्थानू। नगरक नाव आदि उदयानू। तहाँ दिवस दस पाहुने आएँ। मा बैराग बहुत सुख पाएँ।" इसी प्रकार 'पद्मावत' में भी उन्होंने जायस नगर को "धरम अस्थानू" कहकर उसके प्रति अपनी गहरी आत्मीयता प्रकट की है। जायसी के जन्म और मृत्यु के समय के संबंध में विद्वानों में मतभेद नहीं है। कुछ विद्वान उनका जन्म 1435 ई. में मानते हैं, जबकि कुछ के अनुसार

उनका जन्म 1464 ई. में हुआ था। उनकी मृत्यु 1542 ई. में मानी जाती है। यह भी कहा जाता है कि उनके सात पुत्र उनके जीवनकाल में ही एक छत के नीचे दबकर मर गए थे। उनका देहांत अमेठी में हुआ और वहाँ उनकी कब्र भी बताई जाती है। माना जाता है कि जायसी मलिक शेख ममरेज़ के पुत्र थे। चेचक के कारण उनके चेहरे पर स्थायी प्रभाव पड़ा तथा उनकी एक आँख और एक कान की शक्ति नष्ट हो गई थी। अपनी शारीरिक स्थिति का उल्लेख उन्होंने अत्यंत सहज और विनम्र भाव से किया है- “एक नयन कवि मुहम्मद गुनी” तथा “मुहम्मद बाई दिसि तजा, एक सवन, एक आँखि।” शारीरिक अपूर्णता के बावजूद उनके व्यक्तित्व में किसी प्रकार की हीनता या आत्मग्लानि दिखाई नहीं देती। इसके विपरीत उनमें विनम्रता के साथ-साथ अपनी काव्य-प्रतिभा के प्रति आत्मविश्वास भी विद्यमान था। उन्हें अपनी रचना-शक्ति पर इतना विश्वास था कि वे आश्वस्त थे कि उनकी रचना पढ़ने वाला व्यक्ति उन्हें लंबे समय तक स्मरण रखेगा। बचपन में ही उनके माता-पिता का निधन हो गया था, जिसके कारण उनका प्रारंभिक जीवन अभाव और संघर्षों से जुड़ा रहा। वे साधु-संतों और फकीरों के संपर्क में रहे तथा सूफी चिंतन और आध्यात्मिक साधना से प्रभावित हुए। कुछ समय उन्होंने मानिकपुर में अपने नाना के यहाँ भी व्यतीत किया। उनके व्यक्तित्व में सूफी साधना, वैराग्य, लोकजीवन के अनुभव, मानवीय प्रेम और आध्यात्मिक अनुभूति का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। जीवन के अंतिम समय में वे अत्यंत वृद्ध और संतानहीन थे। उनके जीवन के शारीरिक कष्टों, व्यक्तिगत अभावों और आध्यात्मिक अनुभवों ने उनके काव्य को प्रेम, विरह, करुणा और आत्मिक साधना की गहरी संवेदना प्रदान की। जायसी की लगभग बीस कृतियाँ मानी जाती हैं, किंतु वर्तमान में ‘पद्मावत’, ‘अखरावट’, ‘आखिरी कलाम’, ‘चित्रलेखा’, ‘मसलानामा’ और ‘कहरानामा’ प्रमुख रूप से उपलब्ध हैं। ‘कहरानामा’ को डॉ. माताप्रसाद गुप्त ने ‘महरीबाईसी’ नाम से भी संबद्ध किया है। ‘सखरावट’, ‘चम्पावत’, ‘इतरावट’ आदि रचनाएँ भी जायसी के नाम से जोड़ी जाती हैं, किंतु उनकी प्रामाणिकता संदिग्ध मानी गई है। वस्तुतः ‘पद्मावत’ ही जायसी की अभूतपूर्व साहित्यिक कीर्ति का प्रमुख आधार है। ‘पद्मावत’ की अनेक प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं और इसके विभिन्न संपादित रूप रामचंद्र शुक्ल, वासुदेवशरण अग्रवाल, माताप्रसाद गुप्त, ग्रियर्सन आदि विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं। डॉ. माताप्रसाद गुप्त ने रामचंद्र शुक्ल द्वारा संपादित ‘पद्मावत’ के कुछ छंदों को प्रक्षिप्त माना है और कुल 653 छंदों को प्रामाणिक स्वीकार किया है। ‘पद्मावत’ के प्रामाणिक छंदों की संख्या कुछ कम हो या अधिक, इससे उसकी साहित्यिक महत्ता प्रभावित नहीं होती। उसकी वास्तविक महत्ता उसकी मार्मिकता, प्रेमानुभूति, विरह-वेदना और आध्यात्मिक संवेदना में निहित है। जायसी की काव्य-प्रतिभा और उनकी प्रेमाभिव्यक्ति इतनी

प्रभावशाली थी कि उसकी मार्मिकता ने तुलसीदास जैसे महान कवि को भी प्रभावित किया। 'पद्मावत' केवल लौकिक प्रेम की कथा नहीं है, बल्कि प्रेम, विरह, त्याग, साधना और आध्यात्मिक अनुभूति का ऐसा समन्वित काव्य है, जिसे कवि ने मानो अपने हृदय के रक्त और प्रेमजल से सींचकर रचा है।

### 5. 'पद्मावत' : कथावस्तु एवं उद्देश्य

'पद्मावत' की कथा का केंद्र चित्तौड़ के राजा रत्नसेन, सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती और दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन के इर्द-गिर्द निर्मित है। कथा के अनुसार चित्तौड़ का राजा रत्नसेन पद्मावती के अप्रतिम सौंदर्य की चर्चा सुनकर उसे प्राप्त करने के लिए सिंहलद्वीप की यात्रा करता है। अनेक कठिनाइयों और संघर्षों के बाद उसका विवाह पद्मावती से होता है और वह उसे लेकर चित्तौड़ लौट आता है। रत्नसेन की पहली पत्नी नागमती और पद्मावती के बीच उत्पन्न प्रेम, ईर्ष्या और विरह कथा को मानवीय संवेदना प्रदान करते हैं। इसी बीच राघव चेतन के माध्यम से अलाउद्दीन खिलजी को पद्मावती के अद्वितीय सौंदर्य का समाचार मिलता है। वह पद्मावती को प्राप्त करने की इच्छा से चित्तौड़ पर आक्रमण करता है। छल और युद्ध के अनेक प्रसंगों के बाद रत्नसेन और पद्मावती का जीवन संकट में पड़ जाता है। अंततः रत्नसेन युद्ध में वीरगति को प्राप्त होता है और पद्मावती तथा नागमती उसके साथ सती हो जाती हैं। इस प्रकार कथा का अंत करुण, त्रासद और मार्मिक वातावरण में होता है। हालांकि 'पद्मावत' का कथानक केवल ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन नहीं है, बल्कि जायसी ने लौकिक प्रेम-कथा के माध्यम से सूफी आध्यात्मिक चिंतन को अभिव्यक्त किया है।

'पद्मावत' का प्रमुख उद्देश्य लौकिक प्रेम के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम और आत्मिक साधना का संदेश देना है। जायसी के यहाँ प्रेम केवल स्त्री-पुरुष के आकर्षण तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह साधक और परम सत्य के बीच संबंध का प्रतीक बन जाता है। रत्नसेन का पद्मावती को प्राप्त करने के लिए कठिन यात्रा और संघर्ष करना साधक की उस आध्यात्मिक यात्रा का प्रतीक है, जिसमें वह परम सौंदर्य और सत्य की खोज करता है। पद्मावती को परम सौंदर्य अथवा आध्यात्मिक सत्य, रत्नसेन को साधक और अलाउद्दीन को सांसारिक वासना तथा भौतिक लालसा के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है। कथा में प्रेम, विरह, त्याग, तपस्या, धैर्य और आत्मसमर्पण के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि सच्चे प्रेम की प्राप्ति के लिए साधना और त्याग आवश्यक हैं। जायसी बाहरी सौंदर्य की अपेक्षा उसके भीतर निहित आध्यात्मिक अर्थ को अधिक महत्व देते हैं। इस प्रकार 'पद्मावत' का उद्देश्य

प्रेम को मनुष्य के आत्मिक परिष्कार और परम सत्य की प्राप्ति का साधन बनाना तथा सांसारिक मोह, अहंकार और वासना से ऊपर उठकर प्रेम, त्याग और आध्यात्मिक चेतना की ओर उन्मुख करना है।

## 6. जायसी का प्रेम-दर्शन

जायसी का प्रेम-दर्शन सूफी साधना और आध्यात्मिक प्रेम की आधारभूमि पर विकसित हुआ है। सूफी मत में जीवात्मा और परमात्मा के बीच पारमार्थिक भेद नहीं माना जाता, किंतु साधना के व्यवहार में परमात्मा को प्रियतम के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसी कारण 'पद्मावत' में रत्नसेन और पद्मावती का लौकिक प्रेम क्रमशः अलौकिक एवं आध्यात्मिक प्रेम का प्रतीक बन जाता है। जायसी ने स्वयं अपनी कथा को अन्योक्ति के रूप में संकेतित किया है। उनके लिए प्रेम केवल स्त्री-पुरुष के आकर्षण तक सीमित नहीं, बल्कि जीवात्मा की परमात्मा को प्राप्त करने की साधना है। संयोग और वियोग दोनों ही अवस्थाओं में प्रेम का यह आध्यात्मिक स्वरूप दिखाई देता है। विशेषतः विरह के प्रसंगों में लौकिक विरह विश्वव्यापी आध्यात्मिक विरह का रूप ग्रहण कर लेता है। सूर्य, चंद्रमा, नक्षत्र, पृथ्वी, वनस्पति और समस्त जीव-जगत मानो उसी परम प्रिय के विरह में व्याकुल दिखाई देते हैं। इस प्रकार जायसी के यहाँ प्रेम व्यक्तिगत अनुभूति से उठकर सार्वभौमिक और आध्यात्मिक अनुभूति बन जाता है।

'पद्मावत' की कथा में प्रयुक्त पात्रों और घटनाओं के माध्यम से भी जायसी ने अपने प्रेम-दर्शन को प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त किया है। रत्नसेन जीवात्मा अथवा सच्चे साधक का प्रतीक है, जो पद्मावती रूपी परम सौंदर्य या परमात्मा की प्राप्ति के लिए कठिन प्रेम-पथ पर अग्रसर होता है। पद्मावती परम सौंदर्य, चैतन्य परमात्मा का प्रतीक है। हीरामन तोता सद्गुरु का प्रतीक है, जो साधक को परम लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग दिखाता है। चितौरगढ़ शरीर का, रत्नसेन मन का और नागमती सांसारिक मोह-माया एवं संसार के बंधनों का प्रतीक है। राघव चेतन शैतान अथवा साधक को मार्ग से विचलित करने वाली शक्ति का प्रतीक है, जबकि अलाउद्दीन माया का प्रतीक है। इस प्रकार पूरी कथा के लौकिक पात्रों और घटनाओं के पीछे आध्यात्मिक साधना का संकेत निहित है।

जायसी के प्रेम-दर्शन में विरह साधना का महत्वपूर्ण साधन है। प्रिय से वियोग साधक के भीतर प्रेम की तीव्रता को बढ़ाता है और उसे सांसारिक बंधनों से ऊपर उठाकर परम प्रिय की ओर ले जाता है। रत्नसेन का पद्मावती की प्राप्ति के लिए कठिन यात्राएँ करना, संकटों का

सामना करना और अनेक बाधाओं को पार करना साधक की आध्यात्मिक यात्रा का प्रतीक है। प्रेम-पथ सरल नहीं है; इसके लिए त्याग, धैर्य, साधना और आत्मसमर्पण आवश्यक है। इसी कारण जायसी के यहाँ प्रेम केवल भावुकता नहीं, बल्कि साधना और आत्मानुभूति का मार्ग है।

जायसी ने लौकिक प्रेम और आध्यात्मिक प्रेम के बीच गहरा साम्य स्थापित किया है। स्त्री का मायके से पति के घर जाना जिस प्रकार एक भावपूर्ण और मार्मिक अनुभव है, उसी प्रकार जीवात्मा का परमात्मा से मिलन भी साधना की चरम परिणति है। पद्मावती की विदाई, उसका विरह और रत्नसेन के प्रति उसका प्रेम इसी आध्यात्मिक मिलन-विरह की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। इस प्रकार जायसी ने लोकजीवन में अत्यंत परिचित प्रेम, विवाह, विरह और विदाई जैसे अनुभवों के माध्यम से सूफी साधना के गूढ़ तत्वों को सहज और संवेदनात्मक रूप प्रदान किया है।

जायसी का प्रेम-दर्शन मूलतः प्रेम के माध्यम से आत्मा के परमात्मा में विलय का दर्शन है। उनके लिए संसार के समस्त सौंदर्य में उस परम सौंदर्य की झलक विद्यमान है और सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ उसी अनंत सौंदर्य की ओर आकर्षित है। इसीलिए 'पद्मावत' में लौकिक प्रेम-कथा के भीतर आध्यात्मिक प्रेम की व्यंजना निरंतर चलती रहती है। जायसी का प्रेम भौतिक आकर्षण से आरंभ होकर विरह, साधना, त्याग और आत्मसमर्पण के माध्यम से आध्यात्मिक अनुभूति तक पहुँचता है। यही उनके प्रेम-दर्शन की मूल विशेषता और 'पद्मावत' की केंद्रीय आध्यात्मिक चेतना है।

## **7. जायसी की काव्यगत विशेषताएँ**

मलिक मुहम्मद जायसी भक्तिकालीन सूफी प्रेमाश्रयी काव्यधारा के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कवियों में हैं। उनकी काव्य-साधना में लौकिक प्रेम, आध्यात्मिक साधना, रहस्यवाद, लोकजीवन, प्रकृति और मानवीय संवेदना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। उनकी प्रमुख काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

### **1. प्रेम की प्रधानता**

जायसी के काव्य का मूल आधार प्रेम है। उनके यहाँ लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। वे इश्क-मजाज़ी से इश्क-हकीकी की ओर बढ़ने में विश्वास करते हैं। पद्मावत में रत्नसेन और पद्मावती का प्रेम केवल स्त्री-पुरुष के पारस्परिक आकर्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि उसके माध्यम से जीवात्मा और परमात्मा के मिलन की आध्यात्मिक

आकांक्षा व्यक्त हुई है। इसीलिए जायसी के लिए प्रेम मुक्ति और आत्मानुभूति का मार्ग बन जाता है -

“मानुस प्रेम भएउ बैकुंठी,  
नाहिं ते काह छार एक मूँठी।”

अर्थात् मनुष्य के जीवन में प्रेम का होना ही उसे आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करता है।

## 2. प्रेम का आध्यात्मिक रूपांतरण

जायसी की विशेषता यह है कि वे लौकिक प्रेम-कथा को आध्यात्मिक साधना का प्रतीक बना देते हैं। पद्मावत के अंत में स्वयं उन्होंने कथा के पात्रों और घटनाओं का आध्यात्मिक संकेत स्पष्ट किया है -

“तन चितउर, मन राजा कीन्हा।  
हिय सिंघल, बुधि पदमिनि चीन्हा।  
गुरु सुआ जेहि पंथ देखावा।  
बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा॥”

यहाँ चित्तौड़ शरीर, रत्नसेन मन, पद्मावती बुद्धि और हीरामन तोता गुरु का प्रतीक है। नागमती संसार के मोह-जंजाल और राघव चेतन शैतान अथवा पथभ्रष्ट करने वाली शक्ति के प्रतीक हैं। इस प्रकार जायसी का काव्य लौकिक कथा के भीतर आध्यात्मिक अर्थ की व्यंजना करता है।

## 3. रहस्यवाद

जायसी के काव्य में भावात्मक तथा साधनात्मक दोनों प्रकार के रहस्यवाद के दर्शन होते हैं। परम सत्ता को प्रियतम और साधक को प्रेमी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। परम सौंदर्य की प्राप्ति के लिए साधक को कठिन प्रेम-पथ पर चलना पड़ता है। पद्मावत में सिंहलद्वीप की कठिन यात्रा, सिंहलगढ़ की दुर्गमता और रत्नसेन की साधना के माध्यम से आध्यात्मिक यात्रा का संकेत मिलता है। इस प्रकार बाह्य कथा के भीतर आत्मा की परमात्मा तक पहुँचने की साधना निहित है।

## 4. विरह की मार्मिक अभिव्यक्ति

जायसी के काव्य में विरह प्रेम की सबसे प्रभावशाली अभिव्यक्ति है। उनके यहाँ विरह केवल प्रेमी-प्रेमिका के वियोग की पीड़ा नहीं, बल्कि जीवात्मा की परमात्मा से दूरी की आध्यात्मिक वेदना भी है। विरह की तीव्रता इतनी व्यापक हो जाती है कि संपूर्ण प्रकृति उसमें सहभागी दिखाई देती है -

“विरह के आगि सूर जरि काँपा।  
रातिउ दिवस जरै ओहि तापा॥”

### 5. भावनात्मक रहस्यवाद और आध्यात्मिक अनुभूति

जायसी की काव्य-दृष्टि में प्रेम और रहस्यवाद का गहरा संबंध है। पद्मावती के रूप का वर्णन करते हुए कवि की दृष्टि लौकिक सौंदर्य से आगे बढ़कर परम सौंदर्य की ओर चली जाती है। रत्नसेन का पद्मावती के रूप का ध्यान करते हुए संसार की चेतना से ऊपर उठ जाना साधक की समाधि-अवस्था का प्रतीक बन जाता है। इस प्रकार लौकिक सौंदर्य आध्यात्मिक सौंदर्य का माध्यम बनता है।

### 6. गुरु की महत्ता

जायसी के सूफी दर्शन में गुरु साधना-पथ का अनिवार्य मार्गदर्शक है। साधक स्वयं अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकता; उसे सही मार्ग दिखाने वाले गुरु की आवश्यकता होती है। पद्मावत में हीरामन तोता गुरु का प्रतीक है -

“गुरु सुआ जेहि पंथ देखावा,  
बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा।”

यहाँ गुरु साधक को परम सत्य तक पहुँचने का मार्ग दिखाता है। इस प्रकार जायसी ने गुरु को आध्यात्मिक साधना का महत्वपूर्ण आधार माना है।

### 7. प्रतीकात्मकता और अन्योक्ति

जायसी की काव्य-शैली की सबसे उल्लेखनीय विशेषता प्रतीकात्मकता है। उनकी कथा के पात्र और घटनाएँ अपने लौकिक अर्थ के साथ-साथ आध्यात्मिक अर्थ भी धारण करते हैं। रत्नसेन साधक, पद्मावती परम सौंदर्य या परम सत्ता, हीरामन गुरु, नागमती संसार, राघव चेतन शैतान और अलाउद्दीन माया के प्रतीक हैं। इस प्रकार पद्मावत की कथा दो स्तरों पर अर्थ प्रदान करती है- प्रस्तुत कथा और अप्रस्तुत आध्यात्मिक अर्थ।

## 8. प्रबंधात्मकता और कथानक की संगठन-शक्ति

जायसी का पद्मावत एक प्रबंध काव्य है। इसकी कथा क्रमबद्ध रूप से आगे बढ़ती है और एक घटना दूसरी घटना से जुड़ी हुई है। हीरामन तोते का प्रसंग, राघव चेतन का निर्वासन, अलाउद्दीन का चित्तौड़ पर आक्रमण, देवपाल का प्रसंग आदि सभी मुख्य कथा को आगे बढ़ाने में सहायक हैं। कथा में अनेक प्रासंगिक घटनाएँ होने के बावजूद वे मुख्य कथावस्तु से जुड़ी रहती हैं। इस दृष्टि से जायसी का संबंध-निर्वाह उनकी प्रबंध-कला की महत्वपूर्ण विशेषता है।

## 9. घटनाप्रधान कथाविन्यास

पद्मावत का कथाविन्यास मुख्यतः घटनाप्रधान है। इसका उद्देश्य रत्नसेन के संपूर्ण जीवन का विवरण देना नहीं, बल्कि पद्मावती के सती होने की चरम परिणति तक कथा को पहुँचाना है। कथा का प्रत्येक प्रमुख प्रसंग इसी अंतिम परिणति की दिशा में आगे बढ़ता है। इस दृष्टि से जायसी ने घटनाओं के चयन और संयोजन में पर्याप्त कलात्मक कौशल का परिचय दिया है।

## 10. लोकजीवन और लोकसंस्कृति का चित्रण

जायसी के काव्य में तत्कालीन भारतीय लोकजीवन और लोकसंस्कृति का अत्यंत सजीव चित्रण मिलता है। विवाह, विदाई, उत्सव, बाजार, रीति-रिवाज, व्रत, धार्मिक विश्वास, लोकाचार, जादू-टोना, सामाजिक संबंध आदि का चित्रण उनकी काव्य-दृष्टि को लोक से जोड़ता है। मुस्लिम कवि होते हुए भी जायसी ने भारतीय लोककथा और हिंदू सांस्कृतिक परिवेश को अपनी रचना का आधार बनाया। यही उनकी समन्वयवादी दृष्टि का प्रमाण है।

## 11. सांस्कृतिक समन्वय

जायसी के काव्य में हिंदू और मुस्लिम सांस्कृतिक तत्वों का अद्भुत समन्वय मिलता है। सूफी दर्शन को व्यक्त करने के लिए उन्होंने भारतीय लोककथा, हिंदू धार्मिक प्रतीकों और भारतीय सामाजिक जीवन को अपनाया। साथ ही उनकी रचना में सूफी आध्यात्मिक चिंतन भी विद्यमान है। इस प्रकार पद्मावत भारतीय सांस्कृतिक समन्वय की महत्वपूर्ण कृति बन जाता है।

## 12. प्रकृति का रागात्मक चित्रण

जायसी ने प्रकृति को केवल दृश्य-सौंदर्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे मानवीय भावनाओं का सहभागी बनाया है। संयोग में प्रकृति आनंद को बढ़ाती है और वियोग में वही प्रकृति विरह की पीड़ा को तीव्र करती है। बारहमासा और ऋतु-वर्णन में प्रकृति के विविध रूपों

के साथ मानवीय मनःस्थितियों का सुंदर सामंजस्य दिखाई देता है। इस प्रकार प्रकृति उनके यहाँ आलंबन, उद्दीपन और भाव-सहचरी तीनों रूपों में उपस्थित है।

### 13. सौंदर्य-वर्णन और नख-शिख चित्रण

जायसी के काव्य में लौकिक सौंदर्य का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। पद्मावती के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कवि ने उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है। किंतु उनका सौंदर्य-वर्णन केवल शारीरिक आकर्षण तक सीमित नहीं रहता अपितु वह धीरे-धीरे परमात्मा के परम सौंदर्य का प्रतीक बन जाता है।

### 14. बारहमासा और विरह-वर्णन

जायसी के काव्य में बारहमासा परंपरा का प्रभाव दिखाई देता है। ऋतुओं के परिवर्तन के साथ विरहिणी की मनःस्थिति में होने वाले परिवर्तन को उन्होंने अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। प्रकृति की प्रत्येक वस्तु विरहिणी को अपने प्रिय की याद दिलाती है। इस कारण प्रकृति और विरह की अनुभूति एक-दूसरे में घुल जाती है।

### 15. भाषा की सहजता और लोकाभिमुखता

जायसी की भाषा मुख्यतः अवधी है। उनकी भाषा सरल, सहज, प्रवाहपूर्ण, मुहावरेदार और लोकजीवन के निकट है। उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाने के लिए लोकप्रचलित शब्दों के साथ अरबी-फारसी तथा अन्य भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग किया। इससे उनकी भाषा में सांस्कृतिक समन्वय और अभिव्यक्ति की व्यापकता आती है।

### 16. दोहा-चौपाई की शैली

जायसी ने पद्मावत की रचना में दोहा-चौपाई शैली का प्रभावशाली प्रयोग किया है। कथा का प्रवाह मुख्यतः चौपाइयों के माध्यम से चलता है और उनके बीच दोहे आते हैं। इससे कथानक में गति, लय और संप्रेषणीयता बनी रहती है। इस शैली ने उनके प्रबंध काव्य को लोकाभिमुख बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

### 17. अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग

जायसी के काव्य में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति, अन्योक्ति, दृष्टांत आदि अलंकारों का प्रयोग मिलता है। उनके यहाँ अलंकार प्रदर्शन के लिए नहीं, बल्कि भावों और विचारों को

अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयुक्त हुए हैं। विशेष रूप से समासोक्ति और अन्योक्ति उनके आध्यात्मिक संकेतों को व्यक्त करने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई हैं।

### 18. लोककथा का आध्यात्मिकीकरण

जायसी की मौलिकता इस बात में है कि उन्होंने लोक में प्रचलित प्रेमकथा को सूफी साधना का माध्यम बना दिया। रत्नसेन-पद्मावती की प्रेमकथा के माध्यम से साधक और साध्य, जीव और परमात्मा तथा प्रेम और आध्यात्मिक अनुभूति के संबंध को अभिव्यक्त किया गया है। इस प्रकार लोककथा उनके लिए केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि गहन आध्यात्मिक सत्य की अभिव्यक्ति का माध्यम है।

### 19. मानवीय संवेदना और करुणा

जायसी के काव्य में प्रेम, विरह, त्याग, पीड़ा, मृत्यु और सतीत्व जैसे मानवीय अनुभवों की गहरी संवेदना दिखाई देती है। उनके पात्र केवल प्रतीक नहीं हैं, बल्कि अपने सुख-दुख, आकांक्षाओं और संघर्षों के साथ जीवंत मनुष्य भी हैं। यही कारण है कि पद्मावत का आध्यात्मिक अर्थ होते हुए भी उसकी कथा पाठक के मानवीय संवेदनातंत्र को गहराई से प्रभावित करती है।

### निष्कर्ष

जायसी की काव्यगत विशेषताओं का मूल आधार प्रेम, विरह, रहस्यवाद, प्रतीकात्मकता, लोकजीवन, सांस्कृतिक समन्वय और आध्यात्मिक अनुभूति है। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने लौकिक प्रेमकथा को आध्यात्मिक साधना का रूप प्रदान किया। पद्मावत में कथा के स्तर पर रत्नसेन और पद्मावती का प्रेम है, जबकि उसके भीतर जीवात्मा की परमात्मा को प्राप्त करने की साधना निहित है। उनकी भाषा की सहजता, कथानक की प्रबंधात्मकता, प्रकृति एवं सौंदर्य का रागात्मक चित्रण और दोहा-चौपाई की शैली ने उनके काव्य को हिंदी साहित्य में विशिष्ट स्थान प्रदान किया है। इसीलिए जायसी केवल सूफी प्रेमाख्यानक कवि नहीं, बल्कि लौकिक प्रेम को आध्यात्मिक प्रेम में रूपांतरित करने वाले महान समन्वयवादी कवि के रूप में स्मरण किए जाते हैं।

### 8. 'पद्मावत' का साहित्यिक महत्व

मलिक मुहम्मद जायसी की 'पद्मावत' हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन सूफी प्रेमाख्यानक काव्यधारा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्रतिनिधि रचना है। इसका महत्व केवल एक प्रेमकथा

के रूप में नहीं, बल्कि प्रेम, विरह, सौंदर्य, त्याग, साधना और आध्यात्मिक अनुभूति के समन्वित काव्य के रूप में है। जायसी ने रत्नसेन और पद्मावती की लौकिक प्रेमकथा के माध्यम से जीवात्मा और परमात्मा के आध्यात्मिक मिलन का संकेत प्रस्तुत किया है। स्वयं कवि ने कथा के अंत में इसके प्रतीकात्मक अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है- “तन चितउर, मन राजा कीन्हा। हिय सिंहल, बुधि पदमिनि चीन्हा। गुरु सुआ जेहि पंथ देखावा, बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा।” ‘पद्मावत’ का कथात्मक धरातल लौकिक होते हुए भी उसकी अर्थ-व्यंजना आध्यात्मिक है।

महाकाव्य ‘पद्मावत’ का सबसे बड़ा साहित्यिक महत्त्व उसके प्रेम-दर्शन में निहित है। जायसी के यहाँ प्रेम केवल स्त्री-पुरुष के आकर्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि वह आत्मा की परम सत्ता की ओर यात्रा का माध्यम बन जाता है। लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अनुभूति कराना उनकी विशिष्ट काव्य-दृष्टि है। रत्नसेन का पद्मावती की प्राप्ति के लिए कठिन मार्गों से गुजरना, संकटों का सामना करना और अंततः अपने प्रेम के लिए प्राण तक अर्पित कर देना सच्चे साधक की आध्यात्मिक यात्रा का प्रतीक बन जाता है। इसीलिए जायसी का प्रसिद्ध कथन- “मानुस प्रेम भएउ बैकुंठी, नाहिं ते काह छार एक मूँठी” उनके प्रेम-दर्शन का सार प्रस्तुत करता है।

‘पद्मावत’ का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष सांस्कृतिक समन्वय है। जायसी मुस्लिम सूफी कवि होते हुए भी भारतीय लोकजीवन, हिंदू सामाजिक परंपराओं, विवाह-संस्कारों, उत्सवों, रीति-रिवाजों और लोकविश्वासों को अपनी कथा का आधार बनाते हैं। उन्होंने सूफी दर्शन को भारतीय प्रेमाख्यान की कथा-परंपरा के साथ जोड़कर ऐसी काव्य-सृष्टि की, जिसमें भारतीय और इस्लामी सांस्कृतिक चेतना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। इस दृष्टि से ‘पद्मावत’ भारतीय साहित्य की समन्वयवादी और पंथनिरपेक्ष चेतना का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

‘पद्मावत’ का महत्त्व उसके रहस्यवादी स्वरूप के कारण भी है। इसमें भावात्मक तथा साधनात्मक दोनों प्रकार के रहस्यवाद की अभिव्यक्ति मिलती है। पद्मावती परम सौंदर्य और परम सत्ता की प्रतीक बन जाती है, रत्नसेन साधक का, हीरामन तोता गुरु का, नागमती सांसारिक मोह का, राघव चेतन शैतानी प्रवृत्ति का और अलाउद्दीन माया का प्रतीक बन जाता है। इस प्रतीकात्मक योजना के कारण सामान्य कथा के भीतर आध्यात्मिक अर्थ की अनेक परतें विकसित होती हैं।

इस काव्य में विरह और प्रेम की अभिव्यक्ति अत्यंत मार्मिक है। जायसी ने विरह को केवल व्यक्तिगत पीड़ा के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे व्यापक आध्यात्मिक अनुभूति से जोड़ दिया है। रत्नसेन और पद्मावती का विरह आत्मा और परमात्मा के बीच की दूरी का प्रतीक बन जाता है। विरह की अग्नि में केवल प्रेमी ही नहीं जलता, बल्कि पूरी सृष्टि उसके प्रभाव से प्रभावित दिखाई देती है। इस प्रकार जायसी ने व्यक्तिगत विरह को विश्वव्यापी संवेदना का रूप प्रदान किया है।

‘पद्मावत’ का प्रबंध-काव्य के रूप में भी विशेष महत्त्व है। इसकी कथा में घटनाओं का क्रम और परस्पर संबंध बना रहता है। हीरामन तोते का प्रसंग, राघव चेतन का निर्वासन, अलाउद्दीन का चितौर पर आक्रमण, देवपाल का प्रसंग आदि मुख्य कथा को आगे बढ़ाने में सहायक हैं। इस प्रकार प्रासंगिक कथाएँ मुख्य कथा से जुड़ी हुई हैं और कथा-प्रवाह को गति प्रदान करती हैं। ‘पद्मावत’ घटनाप्रधान प्रबंधकाव्य है, जिसमें प्रत्येक प्रमुख घटना अंतिम परिणति की ओर बढ़ती दिखाई देती है।

‘पद्मावत’ में प्रकृति और सौंदर्य का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। सिंहलद्वीप, समुद्र, वन, पर्वत, ऋतुओं और प्राकृतिक परिवेश के वर्णन में कवि की कल्पनाशक्ति और संवेदनशीलता दिखाई देती है। प्रकृति केवल बाहरी दृश्य के रूप में नहीं आती, बल्कि पात्रों की भावनाओं की सहचरी बन जाती है। विशेषतः विरह के प्रसंगों में प्रकृति उद्दीपन का कार्य करती है। इसी प्रकार पद्मावती के रूप-सौंदर्य का नख-शिख वर्णन लौकिक सौंदर्य को अलौकिक सौंदर्य की ओर संकेत करने वाला बना देता है।

भाषा और शिल्प की दृष्टि से भी ‘पद्मावत’ का महत्त्व अत्यंत व्यापक है। जायसी ने अवधी भाषा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया और उसे प्रेम, विरह, रहस्य तथा आध्यात्मिक अनुभूति को व्यक्त करने में अत्यंत समर्थ बनाया। उनकी भाषा में लोकप्रचलित शब्दों के साथ अरबी-फारसी तथा अन्य भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं। इससे उनकी भाषा में व्यापक लोक-संपर्क और सांस्कृतिक समन्वय की विशेषता आती है। दोहा-चौपाई की शैली में रचित यह काव्य भारतीय प्रबंध परंपरा और सूफी मसनवी परंपरा के सुंदर समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

अलंकार-विधान की दृष्टि से ‘पद्मावत’ में रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति और समासोक्ति आदि का सुंदर प्रयोग हुआ है। विशेष रूप से समासोक्ति और अन्योक्ति के माध्यम से लौकिक कथा में आध्यात्मिक अर्थ की व्यंजना की गई है। सिंहलगढ़ का वर्णन, रत्नसेन की

यात्रा और पद्मावती की प्राप्ति आदि प्रसंगों में कथा के साथ साधना-पक्ष का संकेत मिलता है। यही विशेषता 'पद्मावत' को सामान्य प्रेमाख्यान से ऊपर उठाकर विशिष्ट आध्यात्मिक प्रबंधकाव्य का रूप प्रदान करती है।

अंततः कहा जा सकता है कि 'पद्मावत' का साहित्यिक महत्व उसकी बहुस्तरीयता में निहित है। यह एक ओर प्रेम और विरह की मार्मिक कथा है, दूसरी ओर सूफी साधना और रहस्यवाद की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति; एक ओर भारतीय लोकजीवन का जीवंत चित्र है, दूसरी ओर सांस्कृतिक समन्वय का दस्तावेज; और एक ओर अवधी भाषा की काव्यात्मक शक्ति का प्रमाण है, दूसरी ओर प्रबंध-काव्य की उत्कृष्ट रचना। इसी कारण 'पद्मावत' हिंदी साहित्य में जायसी की अमर कीर्ति का आधार बनी और सूफी प्रेमाश्रयी काव्यधारा की प्रतिनिधि एवं कालजयी कृति के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

## 9. मानसरोदक खंड की सप्रसंग व्याख्या

(1)

एक देवस कौनिउँ तिथि आई। मानसरोदक चली अन्हाई॥  
पद्मावति सब सखीं बोलाई। जनु फुलवारि सबै चलि आई॥  
कोइ चंपा कोइ कुंद सहेलीं। कोई सुकेत करना रस बेलीं॥  
कोइ सुगुलाल सुदरसन राती। कोई बकौरि बकचुन विहँसाती॥  
कोइ सु बोलसरि पुहुपावती। कोई जाही जूही सेवती॥  
कोई सोनजरद जेउँ केसरि। कोइ सिंगारहार नागेसरि॥  
कोइ कूजा सदबरग चँबेली। कोई कदम सुरस रस बेली॥  
चलीं सबै मालति सँग, फूल कँवल कमोद।  
बेधि रहे गन गन्धप, बास परिमलामोद॥१॥

### 1. संदर्भ

प्रस्तुत पद्यांश मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' के 'मानसरोदक खंड' से उद्धृत है। इसमें कवि ने पद्मावती के मानसरोवर में स्नान करने के प्रसंग का वर्णन किया है।

### 2. प्रसंग

मलिक मोहम्मद जायसी कृत महाकाव्य 'पद्मावत' के 'मानसरोदक खंड' के इस प्रथम कड़वक में राजकुमारी पद्मावती का अपनी सखियों के साथ मानसरोवर में स्नान हेतु जाने और सखियों के पुष्प-रूपी सौंदर्य का वर्णन किया गया है। पद्मावती अपनी सखियों के साथ मानसरोवर की ओर जाती है। कवि ने इस अवसर पर सखियों की तुलना विभिन्न सुगंधित एवं सुंदर पुष्पों से करते हुए उनके सामूहिक सौंदर्य का अत्यंत मनोहारी चित्र प्रस्तुत किया है।

### 3. व्याख्या

एक शुभ दिन पद्मावती ने अपनी सभी सखियों को बुलाया और मानसरोवर में स्नान करने चलीं। सखियों का समूह ऐसा लग रहा था मानो पूरी की पूरी फुलवारी ही चलकर मानसरोवर की ओर आ गई हो।

सखियाँ रंग-बिरंगे फूलों के समान सुंदर थीं- कोई चंपा, कोई कुंद, कोई केतकी, तो कोई रस-बेली जैसी थी। कोई लाल गुलाल और सुदर्शन की तरह रक्तिम आभा वाली, तो कोई बकुल और बकचुन की तरह खिलखिलाती हुई थी। कोई मौलसिरी, पुष्पवती, जाही, जूही और सेवती के समान थी। कोई केसर जैसी पीली, तो कोई हरसिंगार और नागकेसर जैसी थी। कोई कुब्जा, सदबर्ग (हज़ारा), चमेली और कदंब की सरस लता जैसी लग रही थी।

ये सभी सखियाँ मालती (पद्मावती) के साथ कमल और कुमुद की तरह प्रफुल्लित होकर चलीं। उनके शरीर की दिव्य सुगंध (परिमल) से आकर्षित होकर भौरे और गंधर्व मोहित होकर उनके चारों ओर मँडराने लगे।

### 4. काव्य-सौंदर्य

भाषा: सरस अवधी।

छंद: चौपाई (7 अर्धाली) और दोहा।

अलंकार: उत्प्रेक्षा (जनु फुलवारि सबै चलि आई), रूपकातिशयोक्ति।

(2)

खेलत मानसरोवर गई। जाइ पालि पर ठाढ़ी भई॥

देखि सरोवर रहसहि केली। पदुमावति सौं कहहिं सलेली॥

ए रानी! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी॥  
जौ लहि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जौ खेलहु आजू॥  
पुनि सासुर हम गौनब काली। कित हम कित एह सरवर पाली॥  
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलिकै खेलब एक साथी॥  
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेहीं। दारुन ससुर न आवै देहीं॥  
पिउ पियार सब ऊपर सो पुनि सो करै दहुँ काह।  
कहुँ सुख राखै की दुख दहुँ कस जरम निबाह॥२॥

### 1. संदर्भ

प्रस्तुत पद्यांश मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' के 'मानसरोदक खंड' से उद्धृत है। इसमें पद्मावती के मानसरोवर जाने और वहाँ अपनी सखियों के साथ जल-क्रीड़ा करने के प्रसंग का वर्णन किया गया है।

### 2. प्रसंग

मानसरोवर के तट पर पहुँचकर सखियाँ क्रीड़ा करती हैं और जीवन की नश्वरता तथा ससुराल जाने की विवशता पर विचार करती हैं।

### 3. व्याख्या

पद्मावती अपनी सखियों के साथ मानसरोवर में जल-क्रीड़ा करने जाती है। वहाँ पहुँचकर सभी सखियाँ सरोवर के किनारे खड़ी हो जाती हैं। सरोवर की सुंदरता और मनोहर वातावरण को देखकर उनके मन में प्रसन्नता उत्पन्न होती है। वे हँसी-खुशी के साथ पद्मावती से कहती हैं- हे रानी! तुम अपने मन में विचार करके देखो कि मायके में रहने के दिन बहुत थोड़े हैं। यहाँ तुम्हें पिता का स्नेह, स्वतंत्रता और सुख प्राप्त है, इसलिए जब तक पिता का राज्य है, तब तक जितना खेलना और आनंद लेना चाहो, ले लो।

सखियाँ आगे कहती हैं कि अब शीघ्र ही विवाह के बाद तुम्हें ससुराल जाना पड़ेगा। वहाँ जाने के बाद न तो यह मानसरोवर रहेगा और न ही हम सखियाँ तुम्हारे साथ होंगी। आज जिस प्रकार हम सभी मिलकर अपने हाथों से जल-क्रीड़ा कर रही हैं, वैसा अवसर फिर कब मिलेगा, यह कहना कठिन है। मायके से ससुराल जाने के बाद जीवन की परिस्थितियाँ बदल जाएँगी और इस प्रकार स्वतंत्र होकर खेलना-कूदना संभव नहीं होगा।

सखियाँ ससुराल के जीवन की कठिनाइयों की ओर संकेत करते हुए कहती हैं कि वहाँ सास और ननद अपने कठोर व्यवहार से जीवन को कष्टपूर्ण बना सकती हैं। इसके अतिरिक्त कठोर स्वभाव वाला ससुर भी घर से बाहर निकलने या स्वतंत्र रूप से कहीं आने-जाने की अनुमति नहीं देगा। इस प्रकार विवाह के बाद पद्मावती का जीवन अनेक प्रकार के बंधनों से घिर जाएगा।

अंत में सखियाँ वैवाहिक जीवन की अनिश्चितता को व्यक्त करती हैं। वे कहती हैं कि पति ही सभी से बढ़कर प्रिय होता है और अंततः वही जैसा व्यवहार करेगा, वैसा ही जीवन स्त्री को स्वीकार करना पड़ेगा। पति उसे सुख देगा या दुख, यह निश्चित नहीं है। इसलिए जीवन कैसे बीतेगा और जन्म सफल होगा या कष्ट में बीतेगा, यह भविष्य के गर्भ में छिपा है।

#### 4. काव्य-सौंदर्य

**रस:** शांत रस एवं करुण व्यंजना।

**विशेष:** अवध के लोक-जीवन में बेटियों के गौने और ससुराल के डर का अत्यंत जीवंत चित्रण।

(3)

सरवर तीर पदुमिनी आई। खोंपा छोरि केस मोकलाई॥  
ससि मुख अंग मलैगिरि रानी। नागन्ह झाँपि लीन्ह अरघानी॥  
ओनए मेघ परी जग छाँहा। ससि की सरन लीन्ह जनु राहाँ॥  
छपि गै दिनहि भानु कै दसा। लै निसि नखत चाँद परगसा॥  
भूलि चकोर दिस्टि तहँ लावा। मेघ घटा महँ चाँद दिखावा॥  
दसन दामिनी कोकिल भाषी। भौहँ धनुख गगन लै राखी॥  
नैन खँजन दुह केलि करेहीं। कुच नारँग मधुकर रस लेहीं॥  
सरवर रूप बिमोहा, हिउँ हिलोर करेइ।  
पाय छुवै मकु पावौं तेहि मिसु लहरें देइ॥३॥

#### 1. संदर्भ

प्रस्तुत पद्यांश मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' के 'मानसरोदक खंड' से उद्धृत है। इस प्रसंग में पद्मावती अपनी सखियों के साथ मानसरोवर के तट पर आती है।

## 2. प्रसंग

इस प्रसंग में पद्मावती अपनी सखियों के साथ मानसरोवर के तट पर पहुँचती है। कवि ने यहाँ पद्मावती के अद्वितीय सौंदर्य का अत्यंत सजीव, कल्पनापूर्ण और रूपकात्मक चित्रण किया है। उसके खुले केश, चंद्रमुख, नेत्र, भौंहें, दाँत और उरोजों की तुलना प्रकृति के विभिन्न उपादानों से करते हुए कवि ने उसके रूप को मानसरोवर के सौंदर्य के साथ एकाकार कर दिया है।

## 3. व्याख्या

पद्मावती सरोवर के तट पर आकर अपना जूड़ा (खोँपा) खोलकर बालों को बिखेर लेती है। उसका मुख चंद्रमा के समान और अंग मलयगिरि चंदन जैसे सुगंधित हैं। उसके बिखरे काले केश ऐसे लगते हैं मानो सुगंध से मोहित होकर नागों ने उसके शरीर को ढक लिया हो।

केश बिखरने से ऐसा लगा मानो मेघ घिर आए और पूरे संसार में छाया हो गई। ऐसा प्रतीत हुआ मानो राहु ने चंद्रमा की शरण ले ली हो। दिन में ही सूर्य छिप गया और ऐसा लगा मानो रात्रि नक्षत्रों (सखियों) को लेकर चंद्रमा (पद्मावती) के साथ प्रकट हो गई हो। चकोर पक्षी भ्रमित होकर देखने लगा कि बादलों की घटा में चंद्रमा कहाँ से निकल आया!

पद्मावती के दाँत बिजली की तरह चमकते हैं, वाणी कोयल जैसी मधुर है, भौंहें आकाश में टँगे धनुष जैसी हैं, नेत्र खंजन पक्षी की भाँति चंचल हैं और वक्षस्थल नारंगी के समान सुंदर हैं।

पद्मावती के इस अनुपम रूप को देखकर सरोवर भी मोहित हो गया और उसके हृदय में हिलोरें उठने लगीं। वह इसी बहाने लहरें उठा रहा था ताकि पद्मावती के चरणों का स्पर्श प्राप्त कर सके।

## 4. काव्य-सौंदर्य

**अलंकार:**

**उत्प्रेक्षा:** "ससि की सरन लीन्ह जनु राहँ"

**मानवीकरण (Personification):** सरोवर का पद्मावती के स्पर्श हेतु उत्सुक होना।

**आंतिमान:** चकोर का पद्मावती के मुख को चंद्रमा समझना।

(4)

धरीं तीर सब छीप क सारीं। सरवर महँ पैठीं सब बारी॥  
पाएँ नीर जानु सब बेलीं। हुलसी करहिं काम कै केलीं॥  
नवल बसंत सँवारहि करीं। होइ परगट छहहिं रस भरीं॥  
करिल केस बिसहर बिस भरे। लहरैं लेहि कँवल मुख धरे॥  
उठे कोंप जनु दारिवँ दाखा। भई ओनंत प्रेम कै साखा॥  
सरवर नहीं समाइ संसारा। चाँद नहाइ पैठ लिए तारा॥  
धनि सो नीर ससि तरई ऊई। अब कित दिस्टि कँवल औ कुई॥  
चकई बिछुरि पुकारै कहाँ मिलहु हो नाहँ।  
एक चाँद निसि सरग पर दिन दोसर जल माँह॥४॥

### 1. संदर्भ

प्रस्तुत पद्यांश मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' के 'मानसरोदक खंड' से उद्धृत है। इस प्रसंग में पद्मावती अपनी सखियों के साथ मानसरोवर में स्नान और जल-क्रीड़ा करती है।

### 2. प्रसंग

इस प्रसंग में पद्मावती अपनी सखियों के साथ मानसरोवर में स्नान और जल-क्रीड़ा करती है। कवि ने सखियों के सरोवर में प्रवेश करने, उनके सौंदर्य और यौवन के प्रस्फुटन तथा जल में प्रतिबिंबित उनके रूप का अत्यंत सुंदर एवं रूपकात्मक चित्रण किया है। साथ ही, चंद्रमा, तारे, कमल, चकई आदि प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से पद्मावती और उसकी सखियों के अनुपम सौंदर्य को अभिव्यक्त किया गया है।

### 3. व्याख्या

सखियों ने अपने वस्त्र (छींट की साड़ियाँ) किनारे रख दिए और सरोवर में उतर गईं। जल पाते ही वे ऐसी खिल उठीं मानो बेलों को सींच दिया गया हो। वे प्रसन्न होकर जल-केली करने लगीं।

वे नव-बसंत की कलियों की तरह अपने अंगों को सँवारती हैं। उनके काले बाल सर्प की भाँति जल में तैरते हुए उनके कमल रूपी मुख पर लहरें ले रहे हैं।

सरोवर में पद्मावती रूपी चंद्रमा अपनी सखी रूपी तारों के साथ नहाने उतरा है। ऐसा सुंदर दृश्य देखकर सरोवर में पूरा संसार समाता हुआ प्रतीत नहीं होता। वह जल धन्य है जिसमें चंद्रमा और तारे उगे हैं; अब कमल और कुमुदिनी की ओर किसका ध्यान जाएगा!

चकवी पक्षी अपने पति से बिछड़कर पुकारती है- "हे नाथ! कहाँ मिलूँ? एक चंद्रमा तो रात में आकाश में होता था, आज यह दूसरा चंद्रमा (पद्मावती का मुख) दिन में ही जल के भीतर आ गया है!"

#### 4. काव्य-सौंदर्य

**अलंकार:**

**भ्रांतिमान:** चकवी का पद्मावती के मुख को दूसरा चंद्रमा समझना।

**उत्प्रेक्षा:** "पाएँ नीर जानु सब बेलीं"।

(5)

लागीं केलि करै मँझ नीरा। हंस लजाइ बैठ होइ तीरा॥  
पदुमावति कौतुक करि राखी। तुम्ह ससि होहु तराइन साखी॥  
बादि मेलि कै खेल पसारा। हारु देइ जौं खेलत हारा॥  
सँवरहि साँवरि, गोरिहिं गोरी। आपनि आपनि लीन्हिं सो जोरी॥  
बूझि खेल खेलहु एक साथ। हारु न होइ पराएँ हाथा॥  
आजुहि खेल बहुरि कित होई। खेल गएँ कत खेलैं कोई॥  
धनि सो खेल खेलहिं रस पेमा। रौताई औ कूसल खेमा॥  
मुहमद बारि परेम की जेऊँ भावै तेऊँ खेल।  
तिलही फूलहि संग जेऊँ होइ फुलाएल तेल॥५॥

## 1. संदर्भ

प्रस्तुत पद्यांश मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' के 'मानसरोदक खंड' से उद्धृत है। इस प्रसंग में पद्मावती अपनी सखियों के साथ मानसरोवर के जल में क्रीड़ा कर रही है।

### 1. प्रसंग

सखियों के मध्य हार (माला) की शर्त का खेल और प्रेम साधना की महत्ता का प्रतिपादन। इस प्रसंग में पद्मावती अपनी सखियों के साथ मानसरोवर के जल में क्रीड़ा कर रही है। सखियाँ विभिन्न प्रकार से जल-क्रीड़ा करती हैं और आपस में खेल की प्रतियोगिता करती हैं। कवि ने इस प्रसंग के माध्यम से सखियों के उल्लास, प्रेम, सौहार्द और सामूहिक आनंद का अत्यंत मनोहर चित्रण किया है। अंत में जायसी ने प्रेम के खेल की तुलना तिल के फूल में समाए तेल से करते हुए प्रेम की सहज, गहन और अविभाज्य प्रकृति को व्यक्त किया है।

## 2. व्याख्या

जब सखियाँ जल में क्रीड़ा करने लगीं, तो पद्मावती की चाल और सुंदरता देखकर हंस भी लज्जित होकर तट पर जा बैठा।

पद्मावती ने विनोदमयी शर्त रखी- "तुम सब तारे बनो और मैं चंद्रमा बनकर इस खेल की साक्षी रहूँगी।" जो हारेगी, वह अपना हार (आभूषण) जीत वाली को देगी।

साँवली सखी ने साँवली और गोरी ने गोरी सखी के साथ अपनी जोड़ी बना ली। सखियाँ आपस में कहती हैं- "सोच-समझकर खेलो ताकि हार विरोधी दल के हाथ न लगे। आज का खेल आज ही है, यह अवसर फिर कहाँ मिलेगा!"

वही खेल श्रेष्ठ है जो प्रेम-रस से खेला जाए। जायसी कहते हैं कि यह प्रेम का जल है, इसे जैसे चाहे खेलो। जैसे तिल को फूल के साथ मिला देने पर सुगंधित (फुलेल) तेल बन जाता है, वैसे ही आत्मा जब परमात्मा के प्रेम में लीन होती है, तो वह भी दिव्य गुणों से सुवासित हो जाती है।

## 3. काव्य-सौंदर्य

अलंकार:

**प्रतीप:** हंस का लज्जित होना।

**दृष्टांत:** 'तिलही फूलहि संग जेऊँ होइ फुलाएल तेल'।

(6)

सखी एक तेइँ खेल न जाना। चित अचेत भई हार गँवावा॥  
कवल डार गहि भै बेकरारा। कासों पुकारों आपन हारा॥  
कत खेलै आइँ एहि साथ। हार गँवाइ चलिउँ सैं हाथा॥  
घर पैठत पूँछब एहि हारु। कौनु उतर पाउबि पैसारु॥  
नैन सीप आँसुन्ह तस भरे। जानहु मोंति गिरहीं सब ढरे॥  
सखिन्ह कहा भोरी कोकिला। कौनु पानि जेहि पौनु न मिला॥  
हारु गँवाइ सो ऐसेहिं रोवा। हेरि हेराइ लेहु जौं खोवा॥  
लागीं सब मिलि हेरै, बूड़ि बूड़ि एक साथ।  
कोइ उठी मोंती लै घोंगा काहू हाथ॥६॥

### 1. संदर्भ

प्रस्तुत पद्यांश मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' के 'मानसरोदक खंड' से उद्धृत है। इस प्रसंग में पद्मावती और उसकी सखियाँ मानसरोवर में जल-क्रीड़ा कर रही हैं।

### 2. प्रसंग

इस प्रसंग में पद्मावती और उसकी सखियाँ मानसरोवर में जल-क्रीड़ा कर रही हैं। खेल के दौरान एक सखी का हार जल में गिरकर खो जाता है। वह अत्यंत व्याकुल होकर अपने हार को खोजने लगती है और रोने लगती है। उसकी दशा देखकर अन्य सखियाँ उसे सांत्वना देती हैं तथा सभी मिलकर सरोवर के जल में डूब-डूबकर हार की खोज करने लगती हैं। कवि ने इस प्रसंग के माध्यम से सखियों के आपसी प्रेम, सहयोग, आत्मीयता और सहज हास-परिहास का सुंदर चित्रण किया है।

### 3. व्याख्या

एक सखी खेल का नियम ठीक से नहीं समझ पाई। वह असावधान हो गई और उसका हार जल में गिर गया। वह कमल की डंडी पकड़कर व्याकुल हो गई और कहने लगी- "मैं अपनी हार की दुहाई किससे दूँ? मैं क्यों इनके साथ खेलने आई? अब खाली हाथ लौट रही हूँ। घर में जब हार के बारे में पूछेंगे, तो क्या उत्तर देकर प्रवेश करूँगी?" उसकी आँखें रूपी सीपियों में आँसू इस तरह भर आए मानो मोती गिर रहे हों।

सखियों ने उसे सांत्वना दी- "हे भोली कोकिल! रोने से क्या लाभ? ऐसा कौन-सा जल है जिसमें हवा का झोंका न लगा हो (गलती किससे नहीं होती)?" फिर सबने जल में एक साथ डुबकी लगाकर हार खोजना शुरू किया। किसी के हाथ में सच्चा मोती आया, तो किसी के हाथ में केवल घोंघा (सीप) ही लगा।

#### 4. काव्य-सौंदर्य

अलंकार: उत्प्रेक्षा (नैन सीप आँसुन्ह तस भरे...), अन्यायोक्ति।

(7)

कहा मानसर चहा सो पाई। पारस रूप इहाँ लगी आई॥  
 भा निरमर तेन्ह पायन परसैं। पावा रूप रूप कें दरसैं॥  
 मलै समीर बास तन आई। भा सीतल गै तपनि बुझाई॥  
 न जनों कौनु पौन लै आवा। पुन्नि दसा भै पाप गँवावा॥  
 ततखन हार बेगि उत्तिराना। पावा सखिन्ह चंद बिहँसाना॥  
 बिगसे कुमुद देखि ससि रेखा। भै तेहिं रूप जहाँ जो देखा॥  
 पाए रूप रूप जस चहे। ससि मुख सब दरपन होइ रहे॥  
 नैन जो देखा कवँल भए निरमर नीर सरीर।  
 हँसत जो देखे हंस भए दसन जोति नग हीर॥७॥

#### 1. संदर्भ

प्रस्तुत पद्यांश मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' के 'मानसरोदक खंड' से उद्धृत है। इस प्रसंग में पद्मावती और उसकी सखियों के मानसरोवर में स्नान एवं जल-क्रीड़ा के बाद कवि पद्मावती के अलौकिक सौंदर्य और उसके प्रभाव का वर्णन करता है।

## 2. प्रसंग

इस प्रसंग में पद्मावती और उसकी सखियों के मानसरोवर में स्नान एवं जल-क्रीड़ा के बाद कवि पद्मावती के अलौकिक सौंदर्य और उसके प्रभाव का वर्णन करता है। पद्मावती के चरणों के स्पर्श से मानसरोवर का जल निर्मल और पवित्र हो जाता है तथा उसके रूप की आभा से समस्त प्राकृतिक उपादान भी उसके सौंदर्य को प्रतिबिंबित करने लगते हैं। कवि ने उसके नेत्रों, मुख, दाँत और संपूर्ण रूप की तुलना कमल, चंद्रमा, हंस और हीरों से करते हुए उसके अप्रतिम सौंदर्य को व्यक्त किया है।

## 3. व्याख्या

मानसरोवर सोचने लगा- जो मैं चाहता था, वह मुझे मिल गया। साक्षात् पारस-रूपी पद्मावती यहाँ आ गई। उसके चरणों के स्पर्श से मेरा जल निर्मल हो गया और दर्शन से रूप प्राप्त हो गया।

उसके शरीर की सुगंधित वायु से मानसरोवर शीतल हो गया और उसकी संपूर्ण तपन बुझ गई। न जाने कौन-सा पुण्य पवन उसे यहाँ ले आया, जिससे मानसरोवर के पाप मिट गए और वह पुण्य-दशा को प्राप्त हुआ।

पद्मावती रूपी चंद्रमा के मुस्कुराते ही खोया हुआ हार तुरंत जल के ऊपर तैर आया। उसकी मुख-कांति देखकर सखी रूपी कुमुदिनी खिल उठीं। पद्मावती के मुख के सामने सभी सखियों के चेहरे दर्पण की भाँति चमकने लगे।

पद्मावती ने अपनी दृष्टि से जिसे देखा, वह कमल बन गया; उसका शरीर स्वच्छ जल जैसा निर्मल हो गया; जिसे हँसते हुए देखा, वह हंस बन गया और उसके दाँतों की कांति से मणियों और हीरों की ज्योति जगमगा उठी।

## 4. काव्य-सौंदर्य

**अलंकार:** अतिशयोक्ति, रूपक (पारस रूप), दृष्टांत (ससि मुख सब दरपन होइ रहे)।

**रस:** अद्भुत एवं शृंगार रस।

## 10. बोध प्रश्न

**प्रश्न 1. पद्मावती कहाँ जाने के लिए अपनी सखियों को बुलाती है?**

**उत्तर:** पद्मावती अपनी सखियों को मानसरोवर में स्नान करने के लिए बुलाती है।

**प्रश्न 2. कवि ने पद्मावती की सखियों की तुलना किससे की है?**

**उत्तर:** कवि ने पद्मावती की सखियों की तुलना फूलों से भरी फुलवारी से की है।

**प्रश्न 3. मानसरोदक खंड में किसका सौंदर्य चित्रित हुआ है?**

**उत्तर:** मानसरोदक खंड में पद्मावती, उसकी सखियों तथा मानसरोवर के प्राकृतिक वातावरण के सौंदर्य का चित्रण हुआ है।

**प्रश्न 4. जायसी ने सखियों के सौंदर्य को किस माध्यम से व्यक्त किया है?**

**उत्तर:** जायसी ने विभिन्न पुष्पों के प्रतीकों और उपमानों के माध्यम से सखियों के सौंदर्य को व्यक्त किया है।

**प्रश्न 5. प्रस्तुत अंश की प्रमुख विशेषता क्या है?**

**उत्तर:** प्रस्तुत अंश की प्रमुख विशेषता इसका चित्रात्मक प्रकृति-चित्रण, उपमान-विधान और नारी-सौंदर्य का मनोहारी अंकन है।

## 11. अभ्यास प्रश्न एवं उत्तर

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. जायसी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर:**

हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन प्रेमाख्यानक काव्य की परंपरा में मलिक मुहम्मद जायसी का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वे सूफी काव्यधारा के ऐसे प्रतिनिधि कवि हैं, जिन्होंने लौकिक प्रेम-कथा के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम, आत्मा-परमात्मा के संबंध, त्याग, विरह और साधना जैसे गहन जीवन-मूल्यों को अभिव्यक्त किया। उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना 'पद्मावत' है, जो हिंदी के श्रेष्ठ प्रेमाख्यानक काव्यों में गिनी जाती है। जायसी ने लोकजीवन, भारतीय सांस्कृतिक परंपरा, सूफी दर्शन और मानवीय प्रेम का अद्भुत समन्वय किया है।

## 1. जायसी का व्यक्तित्व

मलिक मुहम्मद जायसी के जीवन के संबंध में प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री बहुत कम उपलब्ध है। उनके नाम में प्रयुक्त 'जायसी' से संकेत मिलता है कि उनका संबंध उत्तर प्रदेश के जायस नामक स्थान से था। उनके जन्म-मृत्यु के संबंध में विद्वानों में मतभेद है, किंतु सामान्यतः उनका जीवनकाल 16वीं शताब्दी माना जाता है। वे ऐसे समय में साहित्य-सृजन कर रहे थे, जब भारत में भक्ति और सूफी आंदोलनों के माध्यम से धार्मिक रूढ़ियों तथा सामाजिक विभाजनों से ऊपर उठकर प्रेम और मानवीय एकता का संदेश दिया जा रहा था।

जायसी का व्यक्तित्व मूलतः प्रेम, करुणा, विनम्रता और आध्यात्मिक संवेदना से निर्मित था। उन्होंने बाह्य आडंबर की अपेक्षा अंतःकरण की शुद्धता और प्रेम को अधिक महत्व दिया। उनके काव्य में हिंदू और मुस्लिम सांस्कृतिक तत्वों का सहज समन्वय दिखाई देता है। वे भारतीय लोकजीवन और उसकी सांस्कृतिक परंपराओं से गहरे जुड़े हुए थे।

उनका व्यक्तित्व एक ओर सूफी साधक का है तो दूसरी ओर संवेदनशील लोककवि का। वे प्रेम को केवल स्त्री-पुरुष के आकर्षण तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे आत्मिक उन्नयन और परम सत्य की प्राप्ति का माध्यम बनाते हैं।

## 2. जायसी का कृतित्व

### 1. पद्मावत

‘पद्मावत’ जायसी की सर्वाधिक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण रचना है। इसकी रचना 1540 ई. के आसपास मानी जाती है। यह अवधी भाषा में रचित सूफी प्रेमाख्यानक प्रबंध काव्य है। इसकी कथा चित्तौड़ के राजा रत्नसेन, सिंहल की राजकुमारी पद्मावती और अलाउद्दीन के इर्द-गिर्द विकसित होती है।

काव्य की लौकिक प्रेमकथा के भीतर जायसी ने सूफी साधना और आध्यात्मिक प्रेम का प्रतीकात्मक अर्थ प्रस्तुत किया है। रत्नसेन को साधक, पद्मावती को परम सौंदर्य/सत्य और प्रेम की प्राप्ति के लक्ष्य के रूप में देखा जाता है। काव्य में प्रेम, विरह, त्याग, संघर्ष, वीरता और बलिदान के साथ-साथ प्रकृति एवं लोकजीवन का सुंदर चित्रण मिलता है।

### 2. अखरावट

‘अखरावट’ जायसी की एक दार्शनिक एवं आध्यात्मिक रचना है। ‘अखर’ का अर्थ अक्षर या वर्ण है। जायसी ने अक्षरों के माध्यम से सृष्टि, जीव, ब्रह्म, शरीर, आत्मा और आध्यात्मिक सत्य से जुड़े विचारों को अभिव्यक्त किया है।

इस रचना में सूफी चिंतन के साथ भारतीय दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों का भी प्रभाव दिखाई देता है। जायसी संसार की उत्पत्ति, मनुष्य के स्वरूप और परम सत्ता के साथ उसके संबंध पर विचार करते हैं।

### 3. आखिरी कलाम

‘आखिरी कलाम’ जायसी की धार्मिक-आध्यात्मिक चेतना को व्यक्त करने वाली रचना है। ‘आखिरी कलाम’ का अर्थ अंतिम वचन या अंतिम उपदेश से संबंधित माना जाता है। इसमें संसार की नश्वरता, मनुष्य के जीवन, मृत्यु, कर्म और ईश्वर के प्रति मनुष्य के संबंध जैसे विषयों पर विचार मिलता है।

### 4. चित्ररेखा

‘चित्ररेखा’ जायसी की एक प्रेमाख्यानक रचना है। इसमें प्रेम, विरह, मिलन और संघर्ष की कथा के माध्यम से मानवीय भावनाओं का चित्रण किया गया है। ‘पद्मावत’ की तरह इसमें भी लौकिक प्रेम के भीतर आध्यात्मिक प्रेम की व्यंजना देखी जाती है।

रचना में प्रेम की परीक्षा, प्रेमी-प्रेमिका की व्याकुलता तथा प्रेम के मार्ग में आने वाली बाधाओं का चित्रण मिलता है। जायसी की कथा-कहने की क्षमता और भावात्मक अभिव्यक्ति इस रचना में भी दिखाई देती है।

### 5. कहरनामा

‘कहरनामा’ जायसी की अपेक्षाकृत छोटी लेकिन महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है। इसे ‘मसलानामा’ भी कहा जाता है। इसमें कवि ने नीति, आध्यात्मिकता और जीवन-दर्शन से जुड़े विचारों को उदाहरणों एवं दृष्टान्तों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

इस रचना में मनुष्य को सांसारिक मोह, अहंकार और अस्थिरता से सावधान करते हुए सदाचार, प्रेम और आध्यात्मिक जागरूकता की ओर प्रेरित किया गया है। इसकी अभिव्यक्ति में उपदेशात्मकता के साथ लोकानुभव का भी समावेश है।

**प्रश्न 2. जायसी के प्रेम-दर्शन की विवेचना कीजिए।**

**उत्तर:**

मलिक मुहम्मद जायसी सूफी काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। उनके काव्य में प्रेम केवल लौकिक आकर्षण या स्त्री-पुरुष के संबंध का नाम नहीं है, बल्कि आत्मा की परम सत्य की ओर यात्रा और साधना का माध्यम है। जायसी ने लौकिक प्रेमाख्यान के माध्यम से सूफी रहस्यवाद, आत्मसमर्पण, विरह, त्याग और परम सत्ता की प्राप्ति की भावना को अभिव्यक्त किया है। उनकी प्रसिद्ध रचना 'पद्मावत' उनके प्रेम-दर्शन की सर्वाधिक सशक्त अभिव्यक्ति है।

### 1. प्रेम ही साधना का मार्ग

जायसी के अनुसार प्रेम मनुष्य को सांसारिक सीमाओं से ऊपर उठाकर आध्यात्मिक सत्य की ओर ले जाता है। प्रेम की राह सरल नहीं है; इसमें साधक को अनेक कठिनाइयों, परीक्षाओं और बाधाओं से गुजरना पड़ता है। रत्नसेन द्वारा पद्मावती की प्राप्ति के लिए किया गया संघर्ष इसी प्रेम-साधना का प्रतीक है।

रत्नसेन पद्मावती के सौंदर्य की चर्चा सुनकर उसके प्रति आकर्षित होता है और उसे प्राप्त करने के लिए अपना राज्य, सुख और सुविधा छोड़ देता है। इस प्रकार प्रेम उसके जीवन का लक्ष्य बन जाता है।

### 2. प्रेम का आध्यात्मिक स्वरूप

जायसी के प्रेम-दर्शन की मूल विशेषता उसका आध्यात्मिक और सूफी स्वरूप है। उनके यहाँ प्रेमिका केवल सांसारिक प्रेमिका नहीं है। वह उस परम सौंदर्य का प्रतीक है जिसकी प्राप्ति के लिए साधक निरंतर प्रयत्न करता है। 'पद्मावत' की कथा को प्रतीकात्मक दृष्टि से देखें तो- रत्नसेन- साधक/आत्मा, पद्मावती- परम सौंदर्य/परम सत्य, हिरामन तोता- गुरु या मार्गदर्शक, अलाउद्दीन- सांसारिक वासना और मोह, प्रेम की यात्रा- आत्मिक साधना। इस प्रकार पद्मावती की खोज वास्तव में परम सत्य की खोज बन जाती है।

### 3. प्रेम में त्याग और समर्पण

जायसी के प्रेम-दर्शन में सच्चे प्रेम की पहचान त्याग और पूर्ण समर्पण है। प्रेमी अपने व्यक्तिगत सुख, अहंकार और स्वार्थ को त्यागकर प्रिय के प्रति समर्पित होता है। रत्नसेन पद्मावती को प्राप्त करने के लिए कठिन यात्रा करता है और अनेक संकटों का सामना करता है। उसका यह संघर्ष बताता है कि सच्चा प्रेम केवल इच्छा नहीं, बल्कि साधना और आत्मसमर्पण है।

#### 4. विरह की महत्ता

जायसी के प्रेम-दर्शन में विरह प्रेम की कसौटी है। प्रेमी जब प्रिय से दूर होता है, तभी प्रेम की वास्तविक तीव्रता प्रकट होती है। विरह में प्रेमी का मन निरंतर प्रिय के चिंतन में लगा रहता है। जायसी के यहाँ विरह केवल दुःख नहीं है। वह साधक को भीतर से शुद्ध करता है और उसे प्रिय की प्राप्ति के लिए अधिक उत्कट बनाता है। इस अर्थ में विरह प्रेम को गहराई प्रदान करने वाली आध्यात्मिक प्रक्रिया है।

#### 5. प्रेम में आत्म-विस्मृति

सच्चा प्रेम व्यक्ति को अपने अहं और स्वार्थ से मुक्त करता है। प्रेमी के लिए प्रिय का अस्तित्व स्वयं से अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। सूफी परंपरा में इसे आत्म-विलय की प्रक्रिया से जोड़ा जाता है। जायसी के प्रेम में भी प्रेमी धीरे-धीरे अपने व्यक्तिगत अस्तित्व को भूलकर प्रिय में स्वयं को समर्पित करता है। यही प्रेम की चरम अवस्था है।

#### 6. प्रेम की कठिन राह

जायसी ने प्रेम को सहज उपलब्ध होने वाली वस्तु नहीं माना। प्रेम का मार्ग कठिन, संघर्षपूर्ण और जोखिम भरा है। 'पद्मावत' में रत्नसेन की यात्रा इस कठिनाई का प्रतीक है। प्रेमी को बाहरी बाधाओं के साथ-साथ अपने भीतर के मोह, अहंकार और भय पर भी विजय प्राप्त करनी पड़ती है। इसीलिए जायसी का प्रेम वीरता और साधना दोनों की माँग करता है।

#### 7. प्रेम और सौंदर्य का संबंध

जायसी के काव्य में सौंदर्य प्रेम को जाग्रत करने वाला तत्व है। पद्मावती का सौंदर्य केवल शारीरिक सौंदर्य नहीं है; वह आदर्श और परम सौंदर्य का प्रतीक है। 'मानसरोदक खंड' में पद्मावती के सौंदर्य का वर्णन करते हुए जायसी प्रकृति के विभिन्न उपादानों को उसके सौंदर्य के सामने रखते हैं। चंद्रमा, कमल, चकोर, खंजन, बिजली आदि सभी उसके रूप के उपमान बन जाते हैं। इस सौंदर्य के प्रति आकर्षण अंततः प्रेम और साधना का रूप ग्रहण करता है।

#### 8. प्रेम में गुरु का महत्व

सूफी साधना में गुरु या पीर का महत्वपूर्ण स्थान है। जायसी के प्रेम-दर्शन में भी साधक को लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए मार्गदर्शक आवश्यक है। 'पद्मावत' में हिरामन तोता रत्नसेन को पद्मावती के संबंध में जानकारी देता है और उसकी यात्रा को दिशा प्रदान करता है। इस प्रकार हिरामन केवल कथा का पात्र नहीं, बल्कि ज्ञान और मार्गदर्शन का प्रतीक भी है।

## 9. लौकिक से अलौकिक की यात्रा

जायसी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे लौकिक प्रेम को अलौकिक प्रेम की ओर ले जाते हैं। 'पद्मावत' की कथा प्रारंभ में राजा और रानी के प्रेम की कथा प्रतीत होती है, लेकिन धीरे-धीरे उसका अर्थ व्यापक हो जाता है। व्यक्ति किसी सुंदर वस्तु या व्यक्ति की ओर आकर्षित होता है, फिर उस आकर्षण में प्रेम उत्पन्न होता है और प्रेम उसे अपने से परे किसी उच्चतर सत्ता की खोज की ओर ले जाता है। इस प्रकार जायसी के यहाँ लौकिक प्रेम आध्यात्मिक प्रेम की सीढ़ी बन जाता है।

## 10. प्रेम और मानवीय समन्वय

जायसी का प्रेम-दर्शन सांप्रदायिक सीमाओं से ऊपर उठने वाला है। सूफी परंपरा के प्रभाव के कारण उनके यहाँ प्रेम मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाली शक्ति है। उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक परिवेश और इस्लामी सूफी चिंतन का सुंदर समन्वय किया। इसलिए उनका प्रेम-दर्शन केवल व्यक्तिगत साधना तक सीमित नहीं रहता, बल्कि मानवीय एकता, सह-अस्तित्व और आत्मीयता का संदेश भी देता है।

## 11. प्रेम की अंतिम परिणति

जायसी के यहाँ प्रेम की अंतिम परिणति आत्म-विलय और परम सत्ता से एकाकार होने की आकांक्षा में होती है। प्रेमी जब अपने अहंकार और स्वार्थ को छोड़ देता है, तब वह प्रिय के अधिक निकट पहुँचता है। इस दृष्टि से प्रेम का लक्ष्य केवल प्रिय की प्राप्ति नहीं, बल्कि स्वयं का रूपांतरण है। प्रेम मनुष्य को भीतर से बदलता है और उसे आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करता है।

## निष्कर्ष

जायसी का प्रेम-दर्शन सूफी रहस्यवाद, मानवीय प्रेम, विरह, त्याग, साधना और आत्मसमर्पण का समन्वित दर्शन है। उनके लिए प्रेम जीवन की सबसे बड़ी साधना है। प्रेमी को प्रिय की प्राप्ति के लिए कठिन मार्ग से गुजरना पड़ता है, अपने अहंकार का त्याग करना पड़ता है और अंततः स्वयं को प्रिय में समर्पित करना पड़ता है।

इसीलिए 'पद्मावत' को केवल रत्नसेन और पद्मावती की प्रेमकथा मानना उसके व्यापक अर्थ को सीमित करना होगा। यह एक साधक की परम सौंदर्य और परम सत्य की खोज की कथा भी है। जायसी ने लौकिक प्रेम को आध्यात्मिक प्रेम में रूपांतरित करके हिंदी साहित्य को

ऐसी प्रेम-दृष्टि प्रदान की, जिसमें प्रेम साधना है, विरह उसकी अग्नि है, त्याग उसकी कसौटी है और आत्मसमर्पण उसकी चरम परिणति।

### प्रश्न 3. 'पद्मावत' के साहित्यिक महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

**उत्तर:**

मलिक मुहम्मद जायसी की 'पद्मावत' हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन सूफी प्रेमाख्यानक काव्यधारा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्रतिनिधि रचना है। इसका महत्त्व केवल एक प्रेमकथा के रूप में नहीं, बल्कि प्रेम, विरह, सौंदर्य, त्याग, साधना और आध्यात्मिक अनुभूति के समन्वित काव्य के रूप में है। जायसी ने रत्नसेन और पद्मावती की लौकिक प्रेमकथा के माध्यम से जीवात्मा और परमात्मा के आध्यात्मिक मिलन का संकेत प्रस्तुत किया है। स्वयं कवि ने कथा के अंत में इसके प्रतीकात्मक अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है- “तन चितउर, मन राजा कीन्हा। हिय सिंहल, बुधि पदमिनि चीन्हा। गुरु सुआ जेहि पंथ देखावा, बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा।” ‘पद्मावत’ का कथात्मक धरातल लौकिक होते हुए भी उसकी अर्थ-व्यंजना आध्यात्मिक है।

महाकाव्य 'पद्मावत' का सबसे बड़ा साहित्यिक महत्त्व उसके प्रेम-दर्शन में निहित है। जायसी के यहाँ प्रेम केवल स्त्री-पुरुष के आकर्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि वह आत्मा की परम सत्ता की ओर यात्रा का माध्यम बन जाता है। लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अनुभूति कराना उनकी विशिष्ट काव्य-दृष्टि है। रत्नसेन का पद्मावती की प्राप्ति के लिए कठिन मार्गों से गुजरना, संकटों का सामना करना और अंततः अपने प्रेम के लिए प्राण तक अर्पित कर देना सच्चे साधक की आध्यात्मिक यात्रा का प्रतीक बन जाता है। इसीलिए जायसी का प्रसिद्ध कथन- “मानुस प्रेम भएउ बैकुंठी, नाहिं ते काह छार एक मूँठी” उनके प्रेम-दर्शन का सार प्रस्तुत करता है।

'पद्मावत' का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष सांस्कृतिक समन्वय है। जायसी मुस्लिम सूफी कवि होते हुए भी भारतीय लोकजीवन, हिंदू सामाजिक परंपराओं, विवाह-संस्कारों, उत्सवों, रीति-रिवाजों और लोकविश्वासों को अपनी कथा का आधार बनाते हैं। उन्होंने सूफी दर्शन को भारतीय प्रेमाख्यान की कथा-परंपरा के साथ जोड़कर ऐसी काव्य-सृष्टि की, जिसमें भारतीय और इस्लामी सांस्कृतिक चेतना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। इस दृष्टि से 'पद्मावत' भारतीय साहित्य की समन्वयवादी और पंथनिरपेक्ष चेतना का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

‘पद्मावत’ का महत्त्व उसके रहस्यवादी स्वरूप के कारण भी है। इसमें भावात्मक तथा साधनात्मक दोनों प्रकार के रहस्यवाद की अभिव्यक्ति मिलती है। पद्मावती परम सौंदर्य और परम सत्ता की प्रतीक बन जाती है, रत्नसेन साधक का, हीरामन तोता गुरु का, नागमती सांसारिक मोह का, राघव चेतन शैतानी प्रवृत्ति का और अलाउद्दीन माया का प्रतीक बन जाता है। इस प्रतीकात्मक योजना के कारण सामान्य कथा के भीतर आध्यात्मिक अर्थ की अनेक परतें विकसित होती हैं।

इस काव्य में विरह और प्रेम की अभिव्यक्ति अत्यंत मार्मिक है। जायसी ने विरह को केवल व्यक्तिगत पीड़ा के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे व्यापक आध्यात्मिक अनुभूति से जोड़ दिया है। रत्नसेन और पद्मावती का विरह आत्मा और परमात्मा के बीच की दूरी का प्रतीक बन जाता है। विरह की अग्नि में केवल प्रेमी ही नहीं जलता, बल्कि पूरी सृष्टि उसके प्रभाव से प्रभावित दिखाई देती है। इस प्रकार जायसी ने व्यक्तिगत विरह को विश्वव्यापी संवेदना का रूप प्रदान किया है।

‘पद्मावत’ का प्रबंध-काव्य के रूप में भी विशेष महत्त्व है। इसकी कथा में घटनाओं का क्रम और परस्पर संबंध बना रहता है। हीरामन तोते का प्रसंग, राघव चेतन का निर्वासन, अलाउद्दीन का चित्तौर पर आक्रमण, देवपाल का प्रसंग आदि मुख्य कथा को आगे बढ़ाने में सहायक हैं। इस प्रकार प्रासंगिक कथाएँ मुख्य कथा से जुड़ी हुई हैं और कथा-प्रवाह को गति प्रदान करती हैं। ‘पद्मावत’ घटनाप्रधान प्रबंधकाव्य है, जिसमें प्रत्येक प्रमुख घटना अंतिम परिणति की ओर बढ़ती दिखाई देती है।

‘पद्मावत’ में प्रकृति और सौंदर्य का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। सिंहलद्वीप, समुद्र, वन, पर्वत, ऋतुओं और प्राकृतिक परिवेश के वर्णन में कवि की कल्पनाशक्ति और संवेदनशीलता दिखाई देती है। प्रकृति केवल बाहरी दृश्य के रूप में नहीं आती, बल्कि पात्रों की भावनाओं की सहचरी बन जाती है। विशेषतः विरह के प्रसंगों में प्रकृति उद्दीपन का कार्य करती है। इसी प्रकार पद्मावती के रूप-सौंदर्य का नख-शिख वर्णन लौकिक सौंदर्य को अलौकिक सौंदर्य की ओर संकेत करने वाला बना देता है।

भाषा और शिल्प की दृष्टि से भी ‘पद्मावत’ का महत्त्व अत्यंत व्यापक है। जायसी ने अवधी भाषा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया और उसे प्रेम, विरह, रहस्य तथा आध्यात्मिक अनुभूति को व्यक्त करने में अत्यंत समर्थ बनाया। उनकी भाषा में लोकप्रचलित शब्दों के साथ अरबी-फारसी तथा अन्य भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं। इससे उनकी भाषा में

व्यापक लोक-संपर्क और सांस्कृतिक समन्वय की विशेषता आती है। दोहा-चौपाई की शैली में रचित यह काव्य भारतीय प्रबंध परंपरा और सूफी मसनवी परंपरा के सुंदर समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

अलंकार-विधान की दृष्टि से 'पद्मावत' में रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति और समासोक्ति आदि का सुंदर प्रयोग हुआ है। विशेष रूप से समासोक्ति और अन्योक्ति के माध्यम से लौकिक कथा में आध्यात्मिक अर्थ की व्यंजना की गई है। सिंहलगढ़ का वर्णन, रत्नसेन की यात्रा और पद्मावती की प्राप्ति आदि प्रसंगों में कथा के साथ साधना-पक्ष का संकेत मिलता है। यही विशेषता 'पद्मावत' को सामान्य प्रेमाख्यान से ऊपर उठाकर विशिष्ट आध्यात्मिक प्रबंधकाव्य का रूप प्रदान करती है।

अंततः कहा जा सकता है कि 'पद्मावत' का साहित्यिक महत्त्व उसकी बहुस्तरीयता में निहित है। यह एक ओर प्रेम और विरह की मार्मिक कथा है, दूसरी ओर सूफी साधना और रहस्यवाद की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति; एक ओर भारतीय लोकजीवन का जीवंत चित्र है, दूसरी ओर सांस्कृतिक समन्वय का दस्तावेज; और एक ओर अवधी भाषा की काव्यात्मक शक्ति का प्रमाण है, दूसरी ओर प्रबंध-काव्य की उत्कृष्ट रचना। इसी कारण 'पद्मावत' हिंदी साहित्य में जायसी की अमर कीर्ति का आधार बनी और सूफी प्रेमाश्रयी काव्यधारा की प्रतिनिधि एवं कालजयी कृति के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जायसी किस काव्यधारा के कवि हैं?

उत्तर: जायसी निर्गुण प्रेमाश्रयी सूफी काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं।

2. जायसी की सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना कौन-सी है?

उत्तर: पद्मावत।

3. पद्मावत की भाषा क्या है?

उत्तर: अवधी।

4. जायसी के काव्य का केंद्रीय भाव क्या है?

उत्तर: प्रेम।

5. जायसी के काव्य में विरह का क्या महत्त्व है?

उत्तर: विरह प्रेम को गहरा करने तथा साधक को प्रिय की प्राप्ति के लिए प्रेरित करने वाली साधना है।

6. पद्मावत में रत्नसेन किसका प्रतीक माना जा सकता है?

उत्तर: सूफी प्रतीकात्मक व्याख्या में रत्नसेन साधक का प्रतीक माना जा सकता है।

7. मानसरोदक खंड में किसका वर्णन है?

उत्तर: मानसरोवर, पद्मावती और उसकी सखियों के सौंदर्य एवं प्राकृतिक वातावरण का वर्णन है।

8. जायसी की भाषा की प्रमुख विशेषता क्या है?

उत्तर: सहज, प्रवाहपूर्ण, चित्रात्मक और लोकजीवन से जुड़ी अवधी भाषा।